अति यथार्थवादी कहानी: एक सामाजिक दृष्टिकोण

डॉ. श्रीमाया सी
सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
पय्यन्नूर कॉलेज, पय्यन्नूर. केरला - 670327
Mob : 9495868174 Email : sreemaya2012@gmail.com

स्वतंत्रता हमारे एवं देश के इतिहास की सबसे बड़ी घटना है ।जो जीवन के बीच में है, कहानीकार ने अनुभव किया कि आज़ादी के बाद हमारे जीवन के आदर्श और मूल्य कितनी तेजी से बदलते हैं, और उनमें एक ज़बरदस्त संघर्ष आया है। इस संघर्ष को, उसकी सारी गहनता, संवेद और नियति के साथ पहली बार इतनी यथार्थता और निर्भीकता से हिंदी के नये कहानीकार की चेतना ने ग्रहण किया । उसने इस युग के संघर्ष को उसके युगबोध के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान इंसान की चेतना को आत्मसात् किया। इसने पहली बार इंसान को परंपरा पुराण, संस्कृति और धर्म से अलग कर उसे इन्सान के रूप में देखने का प्रयत्न किया। यही है 'अतियथार्थवादी' कहानी का निजत्व और उसका अपना व्यक्तित्व। इन जीवनगत,मूल्यगत संघर्षों, उसकी आंतरिक और बाह्य दोनों तरह की चुनौतियों से, रचना के प्राणों से लड़ने का सत्य - यही है स्वतंत्रता के बाद की 'अतियथार्थवादी कहानी' - यही है उसका अपना अपूर्व व्यक्तित्व और निजत्व।

कहानीकार अपनी लंबी कहानियों में व्यक्ति और परिवार के यथार्थ संघर्ष को समाज के व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखने की और बढ़ रहा है और उसकी वे कहानियाँ जिन का विषय व्यक्ति का अकेलापन, हताश और फ्रस्ट्रेशन है। 'सुहागनें' 'आर्द्रा' ' एक और जिन्दगी' तथा 'मित्रों मरजानी' कहानियाँ अपने क्षेत्र की परम मानवीय और सार्थक रचनाएं हैं।

भारतीय समाज के आधुनिक परिवेश का प्रारंभ ब्रिटिश उपनिवेशवादियों के आने के बाद से होता है। अंग्रेज़ों के भारत में आते ही भारतीय जनता के प्रतिरोध संघषों की धारा भी शुरू होती है। इस प्रकार, भारतीय जनता के लिए आधुनिक परिवेश उसके संघर्ष के विभिन्न रूपों से अनिवार्यता: जुट जाता है।

समाज की चुनौतीपूर्ण इस वास्तविकता ने समूचे देश के पैमाने पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद- विरोधी लहर पैदा की, तथा जीवन के हर क्षेत्र में एक संघर्ष शील तथा प्रवाहमान साहित्य और संस्कृति का जन्म हुआ। सामाज की नयी माँगों के अनुरूप नये विचार पैदा हुए, तथा भाषा और साहित्य की नयी परंपराओं का प्रारम्भ हुआ। भारतीय समाज ने अपनी मध्यकालीन स्थिरता और स्तब्धता को तोड़कर जैसे ही आधुनिक काल में प्रवेश किया है, वैसे ही, उसी क्षण से भारतीय जीवन निरंतर बदलता। उसका परिवेश बदलता रहा है। इस परिवेश बदलाव ने भारतीय जीवन के हर अंश को प्रभावित किया है हमारे परिवेश में जो मौलिक परिवर्तन हुआ है। इसने हमारे आचरण को, हमारी दृष्टि को बदलता है। हमारा यह परिवेशगत बदलाव और इस बदलाव के कारण हमारे आचरण और हमारी दृष्टि में जो बदलाव आया है वह समकालीन हिंदी में बखूबी अभिव्यक्त हुआ है या हो रहा है।

इस बदलाव के सबसे महत्वपूर्ण लक्षण आर्थिक क्षेत्र में प्रकट है। यह सच है कि स्वातन्त्रयोत्तर काल में गरीब अधिक गरीब हुआ है और अमीर अधिक अमीर। गरीबी और अमीरों के बीच की खाई निरंतर और अधिक चौड़ी एवं गहरी होती गई है। इसने गाँव से लेकर शहर तक सबको प्रभावित किया है। समसामयिक हिंदी कहानी में गरीबों की यातना और धनाढ्य की भ्रष्टता और प्रदर्शन स्वार्थ और क्रूरता को विस्तार के साथ उनकी अनेक छाया प्रतिच्छायाओं के साथ रेखांकित किया गया है। प्रतिदिन बढ़ती महंगाई में पिसते मध्यवर्गीय व्यक्ति के अनेक करुणा उत्पादक चित्र समकालीन हिंदी कहानी में अंकित हुए हैं। उदाहरण के लिए श्रवण कुमार की कहानी 'बच्चा' प्रस्तुत की जा सकती है । निम्न मध्य वित्त पति,पत्नी और बच्चा नयी दिल्ली के कनाट प्लेस के बरामदों में चक्कर काट रहे हैं। उनके चारों ओर वैभव बिखरा हुआ है। ' हर दुकान पर 'हर कोने पर, खरीदार ऐसे टूट पड़ रहे थे जैसे मक्खियाँ शहद पर टूटती है। लगता था जैसे आज के दिन के लिए ही लोगों ने अपनी सारी पूंजी जुटा रखी हो। जहां उन्हें एक चीज़ की ज़रूरत थी वहां में वे दो खरीद रहे थे। बाज़ार में जैसे कि पैसे की बाढ़ आ रही थी। कुछ लोग जो भी खरीदते थे ,उसे अपनी कारों में जमा किये जा रहे थे। कुछ ने इस काम के लिए छोटे मज़दूर बच्चों का सहारा ले रखा था। इन चमचमाती कारों वालों के उजले, बेष कीमती कपड़ों का कुछ अपना ही रोब था। उनका चटकीलापन जैसे प्रकृति से होड़ ले रहा था, एक ओर यह संपन्नता है ओर दूसरी और यह पति - पत्नी है जिन्होंने अपनी आठ महीने की बजत से कुल साठ रुपये जोड़े हैं। वर्षो से न पति ने, न पत्नी ने अपने लिए कोई गर्म कपड़ा खरीदा है। अपने को आधुनिक और सम्पन्न दिखाने के चक्कर अपनी चादर को इतना ताना है कि नंगे हो- हो जाते हैं। उनके पास अपने एकान्त की रक्षा करने के लिए खिड़की पर टाँगने के लिए ठीक से पर्दे तक नहीं है और इनके अड़ोस- पड़ोस में लोग रातोंरात अमीर हो रहे हैं, कोठियां खड़ी कर रहे हैं। राजनीति और व्यापार दोनों मिलकर लूट रहे हैं।
इस आर्थिक विषमता ने मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने दिया है, उसे 'वस्तु' बना दिया है, उसे अमानवीकृत कर दिया है। सुरेंद्र अरोड़ा की कहानी 'आदमी' इस कथ्य को बड़े शक्तिशाली ढंग से प्रकट करती है। शहर में काम खोजने की तलाश में गाँव से आया बागड़ कई दिन का भूखा है। शहर ने उसे काम तो नहीं दिया, हाँ उसकी कमीज़ और छीन ली। वह जिस बस स्टॉप पर आश्रय लेता है वहाँ खड़े लोगों के लिए वह भय, घृणा या उपेक्षा का विषय है, सौहार्द का, सहयोग का, दया का, करुणा का पात्र नहीं है। जब वह भोजन की सुगंध से आकर्षित होकर एक फोटोग्राफर की कोठी पर पहुंचता है तो उसे आदर और भोजन एक स्वार्थता से प्रेरित है। जब बागड़ अन्धाधुन्ध भोजन पर टूट पड़ रहा है तब सब साहब दनादन उसके फोटो ले रहे हैं क्योंकि इस भूखे आदमी की विभिन्न मुद्राओं में उन्हें ' हंगर परसनिफाईड'और पेट भरने पर आँखों में झलकने वाली तृप्ति में 'सैटिस्फेक्शन परसानीफाईड' दिखाई देते हैं।
सुरेंद्र अरोड़ा की यह कहानी पूँजीवादी व्यवस्था पर बड़ा तीखा प्रहार है। यह कहानी बड़ी कुशलता से इस बात को रेखांकित करती है की भूख आदमी को आदमी नहीं रहने देती। जब आदमी का पेट भर जाता है तब उसकी मनुष्यता सक्रिय हो उठती है। पेट की सामान्य भूख तृप्त की जा सकती है लेकिन लाभ कमाने की तृष्णा तृप्ति नहीं की जा सकती।
मृदुला गर्ग ने अपनी कहानी'दुनिया का कायता' में दिखाया है कि अगर दान - दहेज अच्छा मिले तो एक पत्नी की लाश पर दूसरे विवाह का

सौदा किया जा सकता है। या एक टका प्राप्त करने के लिए पत्नी को अपने सामने दूसरे पुरुष की बाँहों में सौंपा जा सकता है। मृदुला गर्ग ने अपनी एक और कहानी 'टुकड़ा - टुकड़ा आदमी में पूँजीपति के चरित्र का अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस कहानी के माध्यम से पूँजीपति के चरित्र की विरोधी प्रवृत्तियाँ उजागर हुई हैं।मानवीय व्यवहार में होने वाले परिवर्तन ही समाज की संरचना को प्रभावित करता है। फलस्वरुप समय के साथ उसमें भी परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगते है। समाज में निरंतर परिवर्तन होता है। परिवर्तन यदि न हो तो समाज जड़, रूढिग्रस्त एवं निर्जीव बन जाता है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में जब नवचेतना का स्फुरण हुआ तो समाज के प्रत्येक वर्ग में स्वतंत्र भाव विकसित हुआ इस स्वतंत्रता भाव ने स्त्री - पुरुष के आपसी संबंधों को प्रभावित किया। पहली बार स्त्री ने अनुभव किया कि वह भी अपनी स्वतंत्र वैयक्तिक इकाई रखती है। पुरुष से अलग उसका भी एक निजी व्यक्तित्व है।जब आर्थिक रूप से स्त्री आत्मनिर्भर हुई तो उसकी मानसिकता ही विकसित नहीं हुई अपितु वह एक आत्मविश्वास से भर उठी। अभी तक जिन क्षेत्रों पर पुरुषों का एकाधिकार था वह चरमराने लगा। नारी की परिवर्तित भूमिका ने पारिवारिक स्वरूप को प्रभावित किया। चूँकि परिवार समाज की आधारशिला है अतः परिवार के स्वरूप के बदलाव ने समाज को भी बदलाने पर विवश किया। अब समाज नारी को अबला, हेय, पशुतुल्य व अधम प्राणी न मान उसकी क्षमता को स्वीकार करने लगा। स्त्री पति से स्वामी के स्थान पर साथी की तरह व्यवहार करने की अपेक्षा रखने लगी। जहाँ स्त्री की इस परिवर्तित भूमिका को सहज स्वीकार कर लिया गया वहाँ स्थिति सामान्य है लेकिन जिन परिवारों में आज भी स्त्री के प्रति परंपरागत रूढ़ि से युक्त दृष्टिकोण है वहाँ पारिवारिक कलह, विघटन व टूटन दिखाई देने लगी है। इससे स्पष्ट है कि स्त्री की परिवर्तित मानसिकता ने परिवार की अनेक परंपरागत भूमिकाओं को बदला। नवीन मूल्यों के कारण अनेक प्राचीन भूमिकाओं का ह्रास हुआ।

फ्री सेक्स, फ्री लिविंग ने मातृत्व संबंधी अवधारणा को प्रभावित किया। स्त्रियाँ अपनी अलग पहचान बनाने की कामना में मातृत्व को अपदस्थ करने लगी। वहीं अनेक महानगरीय युवतियाँ बिना विवाह के माँ बन कर गौरवान्वित महसूस कर रही है। ऐसी युवतियों के लिए विवाह की अपेक्षा इंसान का जन्म महत्वपूर्ण है। शाश्वत संबंधों के प्रति व्यक्ति ने अपने हित के अनुसार आचरण किया परंपरागत स्वरूप को अस्वीकार ही किया गया - 'वहीं अनाम संबंधों का दायरा भी बढा।

व्यक्ति अपने सुविधानुसार समाज को तोड़ - मरोड़ रहा है। अपनी स्वतंत्रता व स्वयं के हितों के संपादन को महत्व देता हुआ व्यक्ति समाज को रौंद रहा है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पुराने विश्वासों एवं धारणाओं के विरोध में नवीन विचारों, मान्यताओं का जन्म होने लगा। हमारा वर्तमान समाज प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं व्यवस्था से अलग होकर नवीन सभ्यता में प्रवेश कर रहा है। एक नयी 'समाज संरचना' 'नयी संस्कृति' विकसित हो रही है।

समकालीन हिंदी कहानीकार यथार्थ के इन्हीं विभिन्न कोणों को अपनी कहानी में चित्रित कर रहे हैं। जिस गति से जीवन स्थितियाँ बदल रही हैं, उतनी ही तेज़ी से समकालीन कहानी का यथार्थ भी परिवर्तित हो रहा है। 1947 में देश की स्वतंत्रता के साथ देश - विभाजन की त्रासदी, उससे उत्पन्न शरणार्थी समस्या, सांप्रदायिक दंगे, हत्या, लूटपाट, आग - बलात्कार की घटनाएं,स्वार्थों की टकराहट आदि समस्याओं ने हमारे देश की सामाजिक परिस्थितियों को बहुत प्रभावित किया ऐसे वातावरण में साहित्य के क्षेत्र में भी परिवर्तन होना संभव था।

आजादी के बाद घटनाओं ने 'नयी कहानी' की पृष्ठभूमि तैयार की। नये कहानीकारों ने अपना संबंध प्रेमचंद्र की यथार्थवादी कहानियों से जोड़ा। उनकी कई समस्याएँ पहले की भाँति थी, कई उग्र हो गई थीं व कई एकदम नई थी, इस तरह उन्होंने स्वयं के परिवेश के अनुसार अपने अनुभव को कहानी में जगह दी। इस प्रकार इन्होंने अपने 'पूर्ववर्ती' कथाकारों से सामग्री भी ली व अपने निजी परिवेश से भी अनुभवों को जुटाया।

डॉ. नामवर सिंह ने 'नयी कहानी' की मान्यता दी और नयी कहानी की बात के साथ ही लेखकों के नाम,रूप गठन, शिल्प आदि को लेकर कहानी पर विचार करना प्रारंभ कर दिया। आज़ादी के बाद बढ़ती हुई राजनीतिक परिस्थितियाँ, जनता का मोहभंग, समाज का अधिक - से - अधिक आधुनिक होना वैज्ञानिक प्रगति, शिक्षा का प्रचार - प्रसार पारिवारिक विघटन, स्त्री - पुरुषों के संबंधों में परिवर्तन, आदर्शों व नैतिक मान्यताओं का खोखलापन आदि को कई रूपों में देखा और उसका चित्रण किया।

नयी परिस्थितियों व नए संदर्भों का सफल चित्रण करने के लिए कहानीकारों ने कहानी के शास्त्रीय व शिल्पगत ढाँचे में परिवर्तन किया। नयी कहानी में कथानक नाम की कोई चीज़ ही नहीं रह गई।

नये कहानीकारों द्वारा अपने भोगे गए यथार्थ व संवेदना को हमेशा प्रयोग में आने वाले भाषा व शब्दों के माध्यम से चित्रण करने के कारण कहानी में अब न तो कथा - वस्तु का महत्व रह गया और न पात्रों का। नयी कहानी संक्षिप्तता और समकालीनता की माँग करती है। उसमें एक खामोशी, ठण्डापन व सहजता है। "जो जैसा हैं उसे वैसा ही यानी यथार्थ को उसकी संपूर्णता में स्वीकार कर लेने की ईमानदारी और बाकी हर चीज़ को अस्वीकार कर देने का आग्रह 'नयी कहानी में ' ये दो दृष्टियाँ उभरने लगी।

डॉ. नामवर सिंह ने निर्मल वर्मा के कहानी संग्रह 'परिंदे' को नयी कहानी की पहली कृति के रूप में लिया है। इसके पीछे प्रमुख कारण यह है कि निर्मल वर्मा ने व्यापक मानव मूल्यों को अपनी कहानियों का आधार बनाया तथा इस संग्रह की कहानियाँ शिल्प और कला दृष्टि से भी नयी कहानी की अन्य कहानियों से अलग है। "आज की कहानी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह जीवन से दूर नहीं हुई है। बल्कि यह जीवन के अत्यंत गहराई में उतर चुकी है। आज के कहानीकार ने मनुष्य और उसकी जिंदगी का महत्व स्वीकार किया है।

नयी कहानी, मुख्य रूप में अतियथार्थवादी कहानी का शुरू से अंत तक वर्ण्य विषय था बदलते हुए सामाजिक जीवन का चित्रण करना तथा वर्तमान जीवन की पीढ़ी को उभारना इसके लिए उन्होंने पुरानी नैतिकता पर प्रहार किया टूटते हुए पारिवारिक संबंधों को दिखाया तथा आजादी के बाद के मोहभंग और उससे उत्पन्न व्यक्ति में निराशा और कुंठा की भावना को नयी कहानियों में स्थान दिया। कुंठा और निराशा के साथ व्यक्ति भविष्य की जो प्रतीक्षा कर रहा था उस पीड़ा को नये कहानीकारों ने अभिव्यक्त किया।

नयी कहानी, ने कहानी संबंधी परंपरागत धारणा में भी परिवर्तन किया। जहाँ शिल्प में कथानक शिल्प का ह्रास हुआ वहीं घटना,चरित्र - चित्रण संबंधी धारणा को भी तोड़ा। "कहानी में पहले जहाँ चरित्रों की, घटनाओं की प्रधानता थी वहाँ अब प्रधानता थी वहाँ अब प्रभावान्वित,संवेदना,वातावरण आदि की प्रधानता हो गई।"
नयी कहानी में आंचलिकता पर भी जोर दिया गया। नये कहानीकारों ने बदलते हुए गाँवों का चित्रण इसलिए किया कि अब गाँव भी सामाजिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों से मुक्त हो रहे थे। इस प्रकार जिन क्षेत्रों को पहले कहानीकारों ने छुआ तक नहीं था, नये कहानीकारों ने उनकी

पहचान करायी और उसे भारतीय समाज का एक अंग घोषित किया। मोहन राकेश ने " नयी कहानी "की पूरी व्याख्यात्मक परिभाषा देते हुए लिखा है -'नयी कहानी गाँव की कहानी है ,नयी कहानी नये शिल्प की कहानी है, नयी कहानी सहज सांकेतिकता की कहानी है, नयी कहानी सामाजक संपर्क की कहानी है, नयी कहानी साधारण परिचित जीवन की कहानी है ,नयी कहानी समस्त पारदर्शक भाषा में लिखी जाने वाली कहानी है, नयी कहानी सभी तरह की कहानी है।"

स्वतंत्रता के बाद की हमारी सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में परिवर्तन हुआ एवं उनके परिणामस्वरुप औद्योगीकरण, पूँजीवाद ,शहरीकरण, समाजवाद, पाचात्य शिक्षा, संस्कृति एवं बेरोज़गारी आदि का आधिपत्य रहा परिवर्तित परिस्थितियों में संयुक्त परिवारों, सामाजिक मान्यताओं एवं मूल्यों तथा जातीय बन्धनों का विघटन तेजी से हुआ। उद्योगों के फैलाव से नगरों में भौतिक सुविधाओं की प्रगति हुई। आज यांत्रिक प्रगति की दौड में व्यक्ति अपनी मर्यादाओं मूल्यों एवं संस्कारों को तोड़ता जा रहा है। आधुनिक काल में तीव्रगति से होनेवाले सामाजिक परिवर्तनों के फलस्वरुप सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हुई है।

अतियथार्थवादी कहानी का सामाजिक यथार्थ बहुआयामी है। उपभोक्तावाद, उपनिवेशवादी आक्रमण उग्रवाद, सांप्रदायिक उन्माद, सामाजिक विषमता, नारी उत्पीड़न, दलित वर्ग की उपेक्षा, बाजारू संस्कृति आदि को कहानीकार अपनी मानसिक चेतना पर झेल रहा है। यही कारण है कि कहानीकार किसी आंदोलन या आदर्श से प्रेरित न हो सम -सामयिक यथार्थ से टकराकर कहानियाँ लिखना ज्यादा पसंद कर रहा है। सामाजिक प्राणी होने के कारण कहानीकार जो कि अपनी कहानियों का कथ्य समाज से ही ग्रहण करता है।

संक्षेप में मेरा विचार है कि वर्तमान समय में भारतीय समाज की परिस्थितियाँ बहुत अधिक बदल चुकी है। फलस्वरुप मूल्यों में परिवर्तन आना स्वाभाविक है। पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन आया, आत्मीय संबंधों का आधार अर्थ हो गया, फलस्वरुप जीवन में प्रेम तत्व समाप्त होने लगा, वैयक्तिक स्वतंत्रता का परिणाम यह हुआ कि व्यक्ति पराहित के स्थान पर स्वसुख में केंद्रित हो गया। पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति अस्तित्ववादी, फ्रायड़वादी चिंतन, जैविक आवश्यकता के फलस्वरुप नवीन नैतिक मूल्य अस्तित्व में आया, जिसने प्रेम व यौन संबंधी प्राचीन मान्यताओं को न केवल झकझो२ दिया अपितु उनके स्थान पर पूर्णत: नवीन मानदंड प्रस्तुत किया। विवाह संबंधी परिवर्तित दृष्टिकोण ने परिवार नामक संस्था को हिला दिया।

****

संदर्भ सूची :

1. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास - मूल्य संक्रमण - डॉ. हेमेंद्र कुमार पानेरी
2. एक दुनिया समानान्तर - राजेंद्र यादव
3. कहानी : नयी कहानी - डॉ. नामवर सिंह
4. कहानी : स्वरूप और संवेदना - राजेंद्र यादव
5. कहानी आंदोलन की भूमिका - बलराज पाण्डेय
6. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. विजयेन्द्र स्नातक

Consumer Behavior Trends in Online Fashion Retail: A Study of Gen Z Shoppers in India.

Shweta Saini
Research Scholar
Faculty of Fashion and Design, SGT University, Haryana

Abstract

This research paper investigates the evolving consumer behavior patterns of Generation Z (Gen Z) in the Indian online fashion retail sector. As digital natives, Gen Z represents a crucial segment for e-commerce businesses, marked by their high digital literacy, preference for personalization, and strong social media influence. The study explores the key drivers that shape their fashion purchasing decisions, such as price sensitivity, brand engagement, peer and influencer impact, and awareness of sustainable fashion practices. Using a mixed-method research design, primary data was collected through structured questionnaires administered to 312 Gen Z respondents across urban and semi-urban regions of India. The data analysis reveals that while affordability and convenience remain central to online purchases, Gen Z also places significant value on authenticity, peer validation, and ethical considerations. Despite showing high awareness of sustainable fashion, a clear attitude-behavior gap persists, with limited translation into actual purchases. The study also finds that AI-enabled personalization, mobile-first user experiences, and influencer marketing are critical in driving engagement and conversion. Based on the findings, the paper offers practical policy implications and strategic recommendations for digital fashion retailers, including promoting sustainable fashion literacy, regulating influencer transparency, investing in technology-driven personalization, and expanding e-commerce training for youth. By providing insights into the preferences and behaviors of Gen Z consumers, this study contributes to both academic understanding and industry practice in digital retail. It emphasizes the need for inclusive, ethical, and innovative approaches to capture and retain the loyalty of India's youngest consumer cohort.

Keywords-Gen Z, Online Fashion Retail, Consumer Behavior, Digital Marketing, Sustainability in Fashion

Introduction- The evolution of online retail in India has fundamentally reshaped consumer purchasing behavior, particularly within the fashion segment. Fueled by rapid digitalization, increasing internet penetration, smartphone adoption, and widespread use of social media, the Indian fashion retail market has experienced an